E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रघुवीर सहाय के काव्य में संवेदना की प्रासंगिकता

अनुष्टुप चंसौलिया

शोधार्थी, विषयः हिंदी ,जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15384097

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

मूल-संवेदना ही कविता की आत्मा होती है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें आज के कवि महसूस करते हैं। इसका संबंध जीवन की उन यथार्थ स्थितियों से है जिनके भीतर साधारण से साधारण मनुष्य भी साँस लेता और उससे उत्पन्न समस्याओं का साक्षात्कार ही नहीं करता बल्कि उनसे जूझने के लिए विवश भी है।

संवेदना का शाब्दिक अर्थ है हृदयानुभूति । अर्थात आंतरिक भाव को महसूस करना। इसी तरह मूल- संवेदना अर्थात संवेदना की गहराई को समझना उसे महसूस करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति देना । सभी कवि संवेदनशील होते हैं तभी तो वे उनकी गहराई को जानकर अपने शब्दों की अभिव्यक्ति देते हैं।

उन्होंने अपने साहित्य को भूमिकाओं पर अवस्थित किया है। पहली भूमिका सीधे संघर्ष की है। दूसरी भूमिका है अमूर्त प्रतिरोधी शक्तियों की, जिसमें वैज्ञानिक - विश्लेषण करते हुए रघुवीर सहाय कहते हैं कि जीने के लिए संघर्ष करने वाला संस्कारबद्ध या संस्कारों का शिकार आदमी खुद को मुक्त करता है। आज का कवि समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाइयों, बुराइयों सहित कविता में प्रस्तुत करता है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उसे ढ़ालता है। आज की कविताओं में संवेदना नहीं, स्थितियाँ उभारी जा रही हैं, वर्णन, विश्लेषण, अवलोकन का स्पष्टीकरण नहीं बल्कि अनुभूति के अभिव्यक्तिकरण पर अतिरिक्त बल दिया जा रहा है। पूर्ववर्ती कविता की भाँति ही इसकी मूल संवेदना में वस्तुस्थित, घटना, 'चरित्र' या 'वातावरण' में से किसी एक में नहीं बल्कि इन सबकी मिली जुली गूंज में विद्यमान है जो हमारे संपूर्ण संघर्षो, संपूर्ण चेतना और साथ ही हमारी संपूर्ण बौध्दिकता को एकोन्मुख बना देती है ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मुख्यबिन्दुः साधारण, यथार्थ, साक्षात्कार, अभिव्यक्ति, संवेदनशील, स्पष्टीकरण आदि ।

भाषा एवं साहित्य का प्रश्न मानव इतिहास से गहराई के साथ जुड़ा हुआ है । भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा मानव की महान उपलब्धि है। वह हमारे अनुभव और ज्ञान का पर्याय है। इसी भाषा ने अन्य प्राणियों से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाया था। भाषा के साथ ही कविता का जन्म हुआ। साहित्य की सभी विधाओं में से सबसे पहले कविता का उद्भव हुआ था। मनुष्य के हृदय से सुख-दुख आदि भावातिरेक के क्षणों में कविता फूट निकली। कविता अपने आसपास के परिवेश से उत्पन्न होती है और वह उसी परिवेश की परिभाषा देने का प्रयास करती है। डॉ. नगेन्द्र कविता की परिभाषा देते हुए लिखते हैं- "रमणीय भाव, उक्ति- वैचित्र्य और वर्ण लय संगीत तीनों मिलकर कविता का रूप धारण करते हैं। कविता संवेदना और जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति का उत्तम साधन है।"

कवि पढ़िऐ गीता नामक कविता में संवेदना के महत्त्व को व्यक्त किया है-

पढ़िये गीता

बनिये सीता

फिर इनमें सबसे लगा पलीता

किसी मूर्ख की ही परिणिता ।

निज घरवार बसाईये ।।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी कविता की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण रही हैं। इस युग की कविता में वस्तुगत एवं शिल्पगत नवीनता दृष्टिगोचर होती है। इस युग के हिन्दी काव्यकारों की दर्शन, मूल्य - दृष्टि और विचारों में नवीनता लक्षित होती है। इस युग के बहुमुखी प्रतिभाशाली रचनाकार रघुवीर सहाय जी ने अपनी कविताओं में युगीन परिवेश का समग्र चित्रण किया। रघुवीर सहाय जी के आठ काव्य संकलन प्रकाशित हुए। इन संकलनों की कविताओं में विविध धरातलों पर समकालीन जीवन के विचार की अभिव्यक्त हुई है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का आग्रह किया गया है। व्यक्तिवादी एवं समाजवादी चिंतन प्रवृत्ति, समाज के नवनिर्माण का स्वर, युगीन अव्यवस्था के विरूद्ध व्यंग्यात्मक प्रहार, समत्व की कामना, अतीत की विरासत के प्रति श्रद्धा, भविष्य पर आस्था, लघुता एवं निरीहता का बोध और यथार्थ प्रियता रघुवीर सहाय जी की कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों रहीं है । संवेदना और मूल्य के व्यापक धरातल पर रघुवीर सहाय जी की कविता का समग्र अनुशीलन करना इस शोध प्रपत्र का उद्देश्य रहा है।

कवि समाज का एक संवेदनशील एवं चिंतनशील प्राणी है। समाज के प्रत्येक यथार्थ से कवि की संवेदना जुड़ी रहती है । कवि घटनाओं को देखकर निष्क्रिय नहीं रह जाता। कवि की प्रतिक्रिया कविता के माध्यम से अभिव्यंजित होती है। इसी अभिव्यंजना में कवि की संवेदनशीलता का अनुमान लगाया जा सकता है। कवि की संवेदना समाज को नूतन अनुभूतियाँ प्रदान करती है। कवि के विचार पाठक की चेतना का परिष्कार करती है। सामान्य व्यक्ति जैविक धरातल पर संवेदना व्यक्त करता है, परन्तु कवि मन, बुद्धि एवं भावात्मक जगत में विचार को व्यक्त करता है । सामाजिक घटनाएँ कवि की अंतश्चेतना के भीतर की यात्रा करके काव्य का रूप लेती हैं। संवेदनशीलता भी कवि को काव्य लेखन में प्रोत्साहन देती है। कविता आत्माभिव्यक्ति है। इस कारण कवि की आत्मा जिस विषय से संवेदनशील हो जाती हैं, उस विषय को भाषा, शिल्प, लय, छंदों, प्रतीकों और बिबों के माध्यम से बाह्य जगत में प्रकट करती है। कविता में संवेदना का स्वरूप विवेचन करने से पहले संवेदना का अर्थ और उसके विभिन्न प्रकारों को जानना आवश्यक है।

संवेदना का कोशगत अर्थ है अनुभूति, सहानुभूति ज्ञात या विदित होना या शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना । शारीरिक या मानसिक रूप से सुख-दुःख का अनुभव करना ही संवेदना है। संवेदना,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इंद्रिय ज्ञान है। संवेदना के अभाव में किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह एक प्रत्यक्ष अनुभव, चेतना बोध है।

संवेदना ज्ञान का द्वार है। मानव शरीर में ज्ञानवाही तथा गतिवाही तन्तुओं का जाल फैला रहता है। ज्ञानवाही तंतुओं में एक सिरा ग्राहक होता है। दूसरे का संबंध बोध केन्द्र से होता है। कोई सूचना ग्राहक के द्वारा तंतुओं से होती हुई बोध केन्द्र में पहुँचती है। बोध केन्द्र, मस्तिष्क को सूचना देता है। मस्तिष्क गतिवाही

तंतुओं को सूचित करता है और प्राप्त सूचना की प्रतिक्रिया होने लगती है। इसी ज्ञान को संवेदना अथवा इंद्रिय जन्य ज्ञान कहते हैं। जब बालक का जन्म होता है. तब वह अपने वातावरण के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। कुछ समय बीतने के पश्चात उसकी ज्ञानेंद्रियाँ काम करना आरंभ कर देती हैं।

कवि ने 'बौर' नामक कविता में संवेदना को व्यक्त किया है।

नीचे में बौर आया

इसकी एक सहज गंध होती है

मन को खोल देती है गंध वह

जब मति मन्द होती है।

जिसके कारण उसे विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है। यही ज्ञान संवेदना है। संवेदना सभी प्रकार के ज्ञान के लिए उत्तरदायी है। बाहरी संसार-संबंधी वस्तुओं का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों से होता है। संवेदना को ज्ञान प्राप्ति की पहली सीढ़ी माना जाता है। विभिन्न विद्वानों ने इसकी परिभाषा निम्नानुसार दी है-

जलोटा- संवेदना एक साधारण ज्ञानात्मक अनुभव है।

जेम्स- संवेदनाएँ ज्ञान के मार्ग में पहली वस्तुएँ हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डगलस और हालैण्ड- संवेदना शब्द प्रयोग सब चेतना- अनुभवों में सबसे सरलतम का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त शरीर की माँसपेशियों, शरीर के विभिन्न अंग भी संवेदना के जनक हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों डगलस और हालैण्ड ने संवेदना के निम्न लिखित प्रकार बताये हैं।

.

- दृष्टि संवेदना- सभी प्रकार के दृश्य, रंग, रूप, आकार आदि ।
- ध्वनि संवेदना सभी प्रकार की आवाजें ध्वनियाँ आदि ।
- घ्राण संवेदना सभी प्रकार के गंध ।
- स्वाद संवेदना सभी प्रकार के स्वाद ।
- स्पर्श संवेदना सब प्रकार के स्पर्श, दबाव आदि ।
- मॉस पेशी-संवेदना सभी प्रकार मॉस पेशियों की गतियों से संबंधित ।
- शरीरिक संवेदना शरीर के अंदर के अंगों द्वारा प्राप्त होने वाले सब प्रकार के अनुभव।

संवेदना के गुण या विशेषताएँ इस प्रकार है-

1. गुण - प्रत्येक संवेदना में एक विशेष प्रकार का गुण पाया जाता है। एक ज्ञानेन्द्रिय द्वारा अनुभव की जाने वाली दो संवेदनाओं में भी समानता नहीं होती । उदाहरण के लिए दो फूलों की सुगंध और दो मनुष्यों की आवाज में भिन्नता होती है। गुण संवेदना की ऐसी विशेषता है जो किसी एक प्रकार की संवेदना को दूसरे प्रकार की संवेदना से भिन्न बताती है।

2. तीव्रता - प्रत्येक संवेदना में तीव्रता की विशेषता होती है। दो संवेदनाएँ समान रूप से तीव्र नहीं रहतीं। कोई संवेदना अधिक तीव्र या प्रबल रहती है. कोई संवेदना कम तीव्र या निर्बल रहती है। उदाहरण के लिए लाल और सफेद रंगों की तीव्रता में अंतर होता है।

3. अवधि प्रत्येक संवेदना की निश्चित अवधि होती है। उसके बाद व्यक्ति उसका अनुभव नहीं करता। कुछ संवेदनाएँ अल्पकालीन होती हैं और कुछ दीर्घकालीन । ज्ञानेन्द्रियाँ जितनी देर सक्रिय और उत्तेजित रहती हैं, संवेदना की अवधि भी उतनी देर विद्यमान रहती है। उदाहरण के लिए

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

एक मिनट तक सुनी जाने वाली आवाज की संवेदना अल्पकालीन और एक घंटे तक सुनी जाने वाली आवाज की संवेदना दीर्घ कालीन होती है।

4. स्पष्टता प्रत्येक संवेदना में स्पष्टता की विशेषता पायी जाती है। अल्पकालीन संवेदना की तुलना में दीर्घकालीन संवेदना अधिक स्पष्ट होती है। इसके अतिरिक्त जिस संवेदना पर हमारा ध्यान जितना अधिक केन्द्रित होता है. उतनी ही अधिक उसमें स्पष्टता होती है।

5. स्थानीय चिह्न प्रत्येक संवेदना में स्थानीय चिह्न की विशेषता होती है, किसी भी संवेदना की अनुभूति होने पर अपने शरीर के किसी अंग में हम उसका स्थानीय चिह्न बतलाते हैं। उदाहरण के लिए यदि हमारे हाथ को किसी स्थान पर दबाया जाय, तो हम बता सकते हैं कि इस स्पर्श संवेदना का स्थान कौन सा है।

6. विस्तार यह विशेषता प्रत्येक संवेदना में नहीं पायी जाती। ज्ञानेन्द्रिय -सीमित क्षेत्र को प्रभावित करने वाली संवेदना का विस्तार कम और अधिक क्षेत्र

को प्रभावित करने वाली संवेदना का विस्तार अधिक होता है। उदाहरण के लिए सुई की नोंक से होने वाली संवेदना की तुलना में तकुए की नोंक से होने वाली संवेदना का विस्तार अधिक होता है।

संवेदना से वस्तु की सत्ता का आभास होता है। संवेदना अर्थ ज्ञान के लिए पृष्ठभूमि तैयार करता है सबसे विशेष बात यह है कि संवेदना मानसिक विकास में सहायक होती है।

संवेदना का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ है किसी व्यक्ति के दुःख-दर्द को अपने हृदय में उसी रूप में उतारना, समान अनुभूति का संचार करना। सत्ता कवि सहृदय और संवेदनशील होता है। वह मानव समाज एवं किसी भी प्राणी पर पड़ने वाले दुःख, दर्द को बड़ी आसानी से ग्रेल लेता है। संवेदनशील कवि अपनी भाषा के माध्यम से सार्थक अभिव्यक्ति देता है। यही प्रसंग जब काव्य भाषा में किसी प्राणी के करूण प्रसंग को लेकर दुहराया जाता है तो संवेदना का जन्म होता है।

कवि किसी एक विषय के मूल तक जाकर उसकी जड़ को समझकर अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से उसे जीवन से परिचित करवाता है। यही मूल संवेदना कहलाती है। मूल-संवेदना कवि के द्वारा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रत्यक्ष अनुभवों का एक डिस्टिल फार्म है। कवि अपनी भोगी हुई अनुभूतियों को उसी रूप में सम्प्रेषित करना चाहता है जिस रूप में उसने भोगा है। जो अनुभव व्यक्तित्व में घुलते हुए अनुभूति के रूप में छनकर आते हैं यही मूल संवेदना के रूप में उभरते हैं।

प्रत्येक कवि स्वभाव से ही सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक भावुक होता

है। सामान्य पाठक की संवेदनशीलता के स्तर से उत्त स्तर पर अवस्थित कवि अपनी संवेदनशीलता को सम्प्रेषणीय बनाकर पाठक को एक उत्त स्तर पर संवेदनशीलता का आस्वाद कराता है।

जिस प्रकार पानी में कंकड़ फेंकने से वृत्ताकार रूप में छोटी-छोटी लहरियाँ बड़ी बनती चली जाती है. उसी प्रकार किसी प्राणी के दुख-दर्द को देखकर उसके भी हृदय में आघात लगता है, और उसके भी करूण हृदय में लहरें हिलोर लेने लगती हैं। लहरों का विस्तार जितना बड़ा होगा, कवि उतना ही प्रतिभाशाली सिद्ध होगा।

रघुवीर सहायजी एक संवेदनशील कवि हैं। नए काव्य के संदर्भ में उनकी मुख्य भूमिका रही है। उनकी कविता परिस्थिति की जड़ की व्यंजना करती हैं। किसी परिस्थिति को समझना और उसके मूल तक जाना यह रघुवीर सहायजी की कविता की विशेषता रही है।

साहित्य का मूल संबंध मनुष्य की संवेदना से है। संवेदना के बिना साहित्य का निर्माण नहीं हो सकता चाहे उसमें बुद्धिवाद का कितना भी ऊहापोह क्यों न हो, दर्शन की नई-नई भंगिमा क्यों न हो । बुद्धि, दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान सभी को पहले जीवन में आत्मसात् होना पड़ता है, आत्मसात् होने के बाद मनुष्य की संवेदना का अंग बनना पड़ता है, तभी शक्तिशाली साहित्य का निर्माण होता है। संवेदना के बिना साहित्य अधूरा है। साहित्य की पूर्णता तभी संभव है जब युग के साय बदलते नए मूल्यों के प्रति मनुष्य की संवेदना का योग साहित्य में हो। रघुवीर सहाय स्वयं एक संवेदनशील व्यक्ति रहे हैं।

अतः उनका साहित्य संवेदनाओं की नींव पर ही खड़ा हुआ है। उन्होंने सामान्यजन की संवेदनाओं को स्वयं अनुभव किया है, इसीलिए उनके गद्य साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का पदार्थ बोध

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

होता है। रघुवीर सहाय के गद्य साहित्य में संवेदना के स्वरूप को खोजा जाए इससे पूर्व संवेदना की अवधारणा पर एक दृष्टि डालना समीचीन होगा।

मानक हिंदी कोश में 'संवेदना' शब्द का अर्थ दिया है- मन में होने वाले अनुभव या बोधः अनुभूति । किसी को देखकर मन में होने वाला दुःखः किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। यहाँ पर संवेदना का एक अर्थ सहानुभूति (सिम्पेथी) भी दिया है। इसी कोश में संवेदना शब्द को और भी परिभाषित किया है। संवेदना मन में सुख-दुःख आदि की होने वाली अनुभूति या प्रतीति है। यह किसी प्रकार के प्रभाव, स्पर्श आदि के कारण शरीर के अंगों या स्नायुओं में प्राकृतिक रूप से होने वाला स्पंदन है जिससे मन को उसकी अनुभूति होती है। किसी की किसी बात का ज्ञान या बोध होने को भी संवेदना कहा गया है।

रघुवीर सहाय के काव्य में संवेदनाओं का बाहुल्य है समाज की कोई भी संवेदना उनसे छूटी नहीं है। 'रामदास' कविता की संवेदना सभ्य समाज को ग्रकशोर कर रख देती है। अतः उनके काव्य की संवेदनाएँ हर युग में प्रासंगिक रहेगी।

संदर्भ सूनी

1. पारीक अनिल, नागार्जुन का गद्य साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण 2007. पू. 94
2. 2 पारीक अनिल, नागार्जुन का गद्य साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर, संस्करण 2007. पू. 95
3. 3 पारीक अनिल, नागार्जुन का गय साहित्य, नेशलन पब्लिशिंग हाउस जयपुर संस्करण 2007. पू. 96
4. मैलारे दीप हावगीराज साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरुष चरित्र, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2001 पू. 10
5. बालपेजी शुभा, गिरजा कुमार माथुर के काव्य का शिल्प विधान, निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा, संस्करण 2015. पू. 61

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. राउत शारदा, गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन, विद्या प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2000. पृ. 11